



ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 28

कुल पृष्ठ-8

15 से 21 अप्रैल, 2021

दयानन्दाब्द 198

सृष्टि सम्वत् 1960853122

सम्वत् 2078

चै. शु.-03

युवा निर्माण पर ताकत लगायेगा आर्य समाज

- स्वामी आर्यवेश

देश में युवाओं को संस्कारित करने का अभियान होगा तेज

- स्वामी आदित्यवेश

12 जून 2021 को रोहतक में आयोजित होगा आर्य युवा सम्मलेन



(11 अप्रैल 2021) आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की कोर ग्रुप की बैठक स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक, हरियाणा में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं को युवा निर्माण अभियान को पूरी ताकत से आगे बढ़ाने का संकल्प करवाया। उन्होंने कहा कि आज युवाओं के निर्माण की योजना न तो किसी सरकार के पास है ना किसी धार्मिक संगठन के पास है। इसलिए आर्य समाज वर्तमान समय में दिग्भ्रमित युवाओं को सही दिशा देने के लिए व उनमें राष्ट्रभक्ति व वैदिक संस्कृति के संस्कार पैदा करने के लिये कार्य कर रहा है। अब युवा निर्माण अभियान पर और ताकत के साथ कार्य को तेज किया जाएगा। परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री बिरजानंद एडवोकेट ने कहा की नौजवान ही किसी देश की नींव होते हैं और नींव जितनी मजबूत होती है उस

आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा

बैठक में आगामी कार्यक्रमों को जोर-शोर से करने के लिए सर्वसम्मति से निर्णय लिये गए। इस अवसर पर बेंटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक प्रवेश आर्या ने बताया कि लगभग 100 शिविर पूरे प्रान्त में आयोजित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि 1 से 5 जून, 2021 तक टिटौली में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर, 6 से 12 जून, 2021 तक राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जायेगा। जबकि युवाओं का प्रांतीय शिविर 13 से 18 जून, 2021 तक रोहतक के टिटौली में आयोजित होगा। जिसमें 500 युवा भाग लेंगे। बाकी शिविर स्थानीय स्तर पर आयोजित किये जायेंगे।

युवाओं को वैदिक संस्कृति से जोड़ने के लिए सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता का आयोजन होगा। 13 अप्रैल, 2021 नव वर्ष से 13 मार्च 2022 स्वामी इंद्रवेश जन्मदिवस तक 25 हजार नवयुवकों को परिषद् की सदस्यता दिलवाई जाएगी। 500 इकाइयों का गठन किया जाएगा।

पर इमारत भी उतनी ही बुलंद होती है। इसलिए युवाओं को बुराइयों से बचाना समाज की जिम्मेदारी है। समाज के नव निर्माण में नौजवान की भूमिका अहम् होती है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने बताया कि आगामी मई, जून व जुलाई माह में शिविरों के माध्यम से युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि पूरे देश में युवाओं को संस्कारित करने का अभियान तेज गति से आगे

बढ़ाया जायेगा। गाँव-गाँव में युवाओं के पांच-पांच दिन के शिविर आयोजित किये जायेंगे। जिनके माध्यम से युवाओं को प्राचीन वैदिक संस्कृति से, राष्ट्रभक्ति से व नैतिक शिक्षा से ओत-प्रोत किया जायेगा। बेंटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम आर्या ने कहा कि आजकल समाज में डिप्रेशन की समस्या ने लोगों को घेर रखा है। उन्हें योग व आध्यत्मिक प्रशिक्षण देकर डिप्रेशन से बचाया जा सकता है। हम अपने शिविरों में अबकी बार इस पर और ज्यादा केन्द्रित रहेंगे। इस बैठक में वरिष्ठ संयासी स्वामी चंद्रवेश जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, प्रिंसिपल आजाद सिंह बांगड़, पूर्व अध्यक्ष राम निवास, कार्यकारी प्रधान सज्जन राठी, ऋषिराज शास्त्री, कोषाध्यक्ष हरपाल आर्य, प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप कुमार, अशोक आर्य, अजीतपाल, दलबीर आर्य डॉ. विवेकानंद, जयवीर आर्य, डॉ. राजेश, शशि आर्या, रिकू आर्या, रीमा आर्या, इंदु, एकता, पूजा, पूनम आर्य, मीनू आर्या आदि ने अपने विचार रखे।



सम्पादक - प्रो. विठ्ठलराव आर्य

आवाहन आमन्त्रण

यज्ञ पुरुष हमारे पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के 84वें जन्मदिन को मनाने का

यज्ञो वै: पुरुषः – निश्चित रूप से मनुष्य का जीवन भी एक यज्ञ ही है। यज्ञ का भाग है, यज्ञ के लिए है। हमारे पूज्य चरणों ने इस मर्म को जाना। शतपथ ब्राह्मण के इस वचन को अपने हृदय में धारण किया और सन्यस्त होने के बाद अपने जीवन में उन्होंने यज्ञों की प्रक्रिया को प्रारम्भ कर दिया। यह कहते हुए कि – हे अग्नि देव, हे यज्ञदेव अयं ते इध्म – यह जो मेरा जीवन है वह तेरी समिधा है। जब तक यह है, तब तक तुम खूब प्रज्वलित हो जाओ। भरपूर रूप से जलती रहो, जीवन के अन्तिम श्वास तक मैं तुम्हें प्रज्वलित रखूंगा। हर हाल में जलाए रखूंगा, बुझने नहीं दूंगा। वेद भगवान का जब आदेश हुआ कि यह तेरा शरीर यज्ञ के लिए है तो उसी आदेश का पालन करते हुए मैंने भी प्रतिज्ञा कर ली है कि यह मेरा शरीर अग्नि के लिए ही होगा। इसलिए हे जातवेद, हे यज्ञाग्नि मेरे द्वारा तुम इधस्व प्रज्वलित हो जाओ, खूब वर्धस्व वृद्धि को प्राप्त हो जाओ और विभिन्न प्रकार से हमें भी बढ़ाओ। बस इसी प्रार्थना को करते हुए अपने जीवन रूपी समिधा के साथ विभिन्न प्रकार के यज्ञों को करते हुए अन्त में सर्व वै: पूर्णम स्वाहा अपना सर्वस्व ही यहां तक कि अथैदम् भस्मान्तमशरीरं – इस शरीर ने एक दिन भस्म ही होना है तो क्यों न इसे यज्ञ की ही भस्मी बना दूँ, कहते हुए जो अपने शरीर को भी यज्ञ की अग्नि को समर्पित कर ब्रह्मलोक को प्रयाण कर गए। ऐसे हमारे पूज्य चरणों के जन्मदिन को क्यों न हम यज्ञ व सत्संग के द्वारा मनायें। यही यज्ञपुरुष, हमारे पूज्य चरणों के जन्मदिन को मनाने का सर्वोत्तम तरीका होगा। उनके श्री चरणों में अपने श्रद्धासुमनों को अर्पित करने का श्रेष्ठ प्रकार होगा। यज्ञ में सभी देवजन, पितृगण भी आ उपस्थित हो जाते हैं। इसका समर्थन स्वयं वेद भगवान भी करते हैं। इसलिए यज्ञ व सत्संग के द्वारा हम अपने पूज्य चरणों के जन्मदिन को मनाते आ रहे हैं। 5 अप्रैल को अपने प्रिय पुत्र स्व. ऋषि कुमार को भी इसी तरह हम याद करते हैं, प्रतिवर्ष याद करते हैं। इन दिनों में हम देवों, पितरों व दिव्यात्माओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं। इस बार भी 5 अप्रैल को जीवन के अन्तिम क्षणों तक भी हृदयपटल पर अमिट स्मृतियों वाले प्रिय पुत्र जन्मदिन को पारिवारिक स्तर पर इसी रूप में मनायेंगे और 5 मई को पूज्य चरणों के जन्मदिन को 3 से 5 मई को त्रिदिवसीय कार्यक्रम का रूप देकर यज्ञ व सत्संग के द्वारा मनाने के लिए आप सभी प्रियजनों का आवाहन कर रहा हूँ। यद्यपि उत्साह उमंगों से भरे हृदयाकाश पर कोरोना से जनित सघन निराशा के बादल भी बीच-बीच में छाने का प्रयास कर रहे हैं। फिर भी उस निराशा से ऊपर उठने का प्रयास करते हुए मैं आप सबसे निवेदन कर रहा हूँ। हे मेरे प्रियजनों आओ हम सब मिलकर उस दिव्य पुरुष, परमात्मा के वरदपुत्र, अपने पूज्य चरणों के जन्मदिन को यज्ञ याग का भव्य आयोजन के साथ वातावरण में गीत संगीत की मधुर स्वर लहरियों को बिखेरते

हुए, प्रवचनों की पतित पावनी गंगा को बहाते हुए मनाएं। उनके जन्मदिन को मनाने में अपनी-अपनी अहम भूमिका निभायें। जीवन में सेवा व समर्पण के ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं। सौभाग्य से जब आते हैं, तब इन्हें गंवाना नहीं चाहिए। इस कार्यक्रम को सफल करने के लिए भरपूर रूप से अपना योगदान देना। समय परिस्थितिवश यदि आप अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कर सकते हैं तो जिस प्रकार आजकल सभी कार्य ऑनलाइन हो रहे हैं। आप भी अपनी सहयोग राशियों के साथ अपनी भूमिका, अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकते हैं। कार्यक्रम तो हर हाल में हमने करना ही है। शक्ति व संबल आप लोगों के सहयोग के द्वारा ही प्राप्त होता है और होगा। परमपिता परमात्मा की कृपा से व दिव्यजनों, दिव्यात्माओं के साथ साथ पूज्य चरणों के आशीर्वाद से तो शक्ति सामर्थ्य व संबल निरन्तर प्राप्त हो ही रहा है। अतः शक्ति व



संबल के लिए आप लोग भी अपने सहयोग के हाथों को बढ़ाए रखना, उन्हें नीचे न होने देना। ईश्वर सबका कल्याण करे। दिव्यजन, दिव्यात्माएं अपने अमोघ आशीर्वादों से सबका अभिसिंचन करें। आप लोगो के स्नेह व सहयोग का आकांक्षी, आप लोगों का प्रियपात्र उस प्रभु का वरदपुत्र आचार्य महावीर सिंह।

यद्यपि उन दिनों यहाँ बोर्ड की परीक्षाएं भी चल रही होंगी। फिर भी हमने यह कार्यक्रम तो करना ही है। उसी के अनुरूप कार्यक्रम की समय सारिणी बनाई जा रही है जो निम्न प्रकार से हैं। सभी आत्मीयजनों को इस विषय की सूचना दे रहे हैं तथा उस कार्यक्रम को उत्साह व उमंग के साथ सम्पन्न करने के लिए उसमें अपना भरपूर सहयोग के लिए उसमें अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए आमंत्रित भी कर रहे हैं।

3, 4 मई, 2021

प्रातः : 6 बजे से 7:30 बजे तक यज्ञ,
: 7:30 बजे से 8:15 बजे तक
भजन,

: 8:15 बजे से 9 बजे तक उपदेश
सायं : 3:30 बजे से 4:45 बजे तक यज्ञ,
: 4:45 बजे से 6 बजे तक भजन,
: 6 बजे से 6:45 तक उपदेश,
6:45 बजे से 7 बजे तक संध्या व
शांतिपाठ

5 मई, 2021

प्रातः : 6 बजे से 7:30 बजे तक यज्ञ,
: 7:30 बजे से 8:30 बजे तक
भजन,
: 8:30 बजे से 9:30 बजे तक
उपदेश,
: 9:30 बजे से 10 बजे तक
पूर्णाहुति का कार्यक्रम।

10 बजे से प्रसाद वितरण, जलपान और कार्यक्रम की समाप्ति।

इस देवस्थलि में एकत्रित होने वाले देवजनों में से वे देव जन जिनके मुंह से इस स्वर्ग स्थली पर ज्ञान गंगा प्रवाहित होगी।

पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पूज्य स्वामी सवितानन्द जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, झारखण्ड

पूज्य स्वामी आदित्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा तथा अन्य संन्यासी व विद्वत्जन जिन्हें यज्ञदेव यहां आकर्षित कर ले आयेंगे।

वे स्वर सम्राट – जो अपने सरस स्वर लहरियों की झंकार से वातावरण को झंकृत करेंगे। यज्ञ के माहौल में अपनी मधुर सरस संगीत का रस घोलेंगे।

श्री संदीप आर्य जी, श्री मनोज कुमार जी, श्री सुनील कुमार शास्त्री, श्री संजय कुमार शास्त्री, श्रीमती नीतू आर्या, श्रीमती सरस्वती देवी।

जिन देवजनों से यज्ञ परिसर शोभायमान होगा। दिव्यात्माएं, दिव्यजन पूज्य चरण, इष्टों देवों के साथ-साथ मूर्त रूप से आप सभी आत्मीयजन, देवजन तथा यज्ञ की चुम्बकीय शक्ति से आने वाले सभी श्रद्धालुजन, यज्ञप्रेमीजन एवं आर्य समाज चम्बा के सभी सदस्य दयानन्द मठ चम्बा के सभी सदस्य, स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल के सदस्य तथा महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र वर्ग तथा सभी अध्यापक व कर्मचारी वर्ग।

यजमान यज्ञ के मान व सम्मान के गरिमामय पद की शोभा को बढ़ाने वाले यजमान के अभिलाषी सौभाग्यशाली जन अपने नाम पूर्व ही प्रेषित कर देने की कृपा करना।

आंखें आप लोगों के दर्शनों की प्यासी रहेंगी।

जिनकी रहेंगी वे लोग

आचार्य महावीर सिंह एवं दयानन्द मठ प्रबंध समिति के सभी सदस्य, स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल के सभी सदस्य, महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय की प्राचार्या उपाचार्या सहित सभी अध्यापक वर्ग व समस्त छात्र-छात्राएँ व कर्मचारी वर्ग

जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्बोधन



प्रकाश जी, श्री सेवक राम जी, श्री रामपाल जी, श्री मेहरपाल जी, श्री विजेन्द्र सहरावत पूर्व एस.एच.ओ., श्री अमर सिंह, श्री यशपाल, श्री शमशेर सिंह मान व श्री सत्यवीर शास्त्री आदि का विशेष योगदान रहा। महात्मा रणवीर जी व उनकी पूरी टीम ने तीन दिन तक चले इस यज्ञ में हजारों लोगों तक न केवल इसकी सुगन्धि पहुँचाकर पुण्य कमाया बल्कि विद्वानों के व्याख्यानों से भी श्रोताओं ने विशेष लाभ उठाया।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए यह संदेश दिया कि हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि अपने जीवन में हम सभी यज्ञ को चरितार्थ करेंगे अर्थात् यज्ञ की भांति हम भी समर्पण, त्याग, परोपकार एवं निष्काम सेवा को अपने जीवन में अपनाकर यज्ञीय जीवन बनायेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन में जहाँ यज्ञ का महत्त्व एवं यज्ञ का सार उपस्थित श्रोताओं को समझाया वहीं उन्होंने मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए वेद के मन्त्रों के आधार पर बताया कि मनुष्य को सर्वप्रथम मनुष्य बनने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए बताया है कि अन्धों के सुख और दुःख को अपना सुख और दुःख समझने वाला व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। स्वामी जी ने यम, नियमों की व्याख्या करते हुए औरों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए और अपने प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए बड़ी सरल भाषा में उपस्थित श्रोताओं को समझाया। ओजस्वी वाणी में की गई उनकी व्याख्या से श्रोता मन्त्र मुग्ध हो गये।



यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जो लोग यज्ञ को और धर्म को छोड़ देते हैं तो यज्ञ और धर्म उनको छोड़ देता है। जो लोग ईश्वर को छोड़ देते हैं ईश्वर उनको छोड़ देता है। आचार्य अरविन्द कुमार ने यजमानों तथा उपस्थित लोगों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के उपरान्त सभी विद्वानों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर ब्रह्मभोज की समुचित व्यवस्था भी की गई थी। समारोह में स्वामी आर्यवेश जी को उनके कई पुराने सहयोगी एवं मित्र मिले जिन्होंने अपनी पुरानी स्मृतियाँ प्रस्तुत करके अपने अनुभव सुनाये। उन्होंने नये सिरे से आर्य समाज के कार्य करने का आश्वासन भी दिया।

जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में गत 4 से 6 अप्रैल, 2021 तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के संयोजक महात्मा रणवीर निवासी ग्राम-कुटबी, जिला-मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश के निमंत्रण पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी 6 अप्रैल, 2021 को पूर्णाहुति के अवसर पर यज्ञ में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त स्वामी सत्यवेश जी, ब्र. सहसरपाल आर्य जी, श्री ओमपाल निरपुणा आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। यज्ञ के ब्रह्मा पद को गुरुकुल बरनावा के नव नियुक्त प्रधान आचार्य श्री अरविन्द कुमार शास्त्री जी ने सुशोभित किया तथा श्री सुनील शास्त्री एवं श्री गंगा शरण आर्य ने वेद पाठ के द्वारा अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस यज्ञ में सर्वश्री शीलकराम मलिक, विनय सिंह तथा मनोज कुमार सपत्नीक यजमान बने और पूरी निष्ठा के साथ यज्ञ को सम्पन्न कराया। इस यज्ञ की व्यवस्था में मुख्य रूप से श्री दिलबाग सिंह जी, वैद्य ब्रह्म

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक में दयानंद चेर के अध्यक्ष डॉ. रवि प्रकाश का आर्य समाज ने किया स्वागत

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में दयानंद चेर स्थापित हुई है। इस चेर के अध्यक्ष पद पर आर्य समाज के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान डॉ रवि प्रकाश आर्य को नियुक्त किया गया है। डॉ रवि प्रकाश देश विदेश में वैदिक विचारधारा व महर्षि दयानंद द्वारा वेदों के संदर्भ में बताए गए सिद्धांतों को देश दुनिया में प्रचारित व प्रसारित करने के लिए जाने जाते हैं। 31 मार्च को महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में उन्होंने नियुक्ति प्राप्त की। 1 अप्रैल, 2021 को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली के प्रो. श्योताज सिंह सभागार में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश, संन्यास आश्रम गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चंद्रवेश, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, सहित आर्य समाज के गणमान्य अधिकारियों ने डॉक्टर रवि प्रकाश आर्य का ओ३म पड्डिका, स्मृति चिन्ह व महर्षि दयानंद का चित्र देकर सम्मान किया। स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर कहा कि महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में दयानंद चेर की स्थापना अपने आप में ऐतिहासिक कार्य की शुरुआत है। आर्य समाज बहुत लंबे समय से इसकी मांग भी कर रहा था। स्वामी जी ने यूजीसी का धन्यवाद ज्ञापित भी



किया। डॉ रवि प्रकाश आर्य के बारे में बोलते हुए उन्होंने बताया कि डॉ रवि प्रकाश आर्य देश दुनिया में वेदों में विज्ञान आदि गंभीर विषयों पर अपने विचार रखने के लिए जाने जाते हैं। निश्चय ही उनके इस पद पर आने से वेदों तथा महर्षि दयानंद की विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने का अद्भुत कार्य प्रारंभ होगा। डॉ रवि प्रकाश आर्य ने कहा कि दयानंद चेर के माध्यम से कुछ विशेष बिंदुओं के ऊपर कार्य प्रारंभ किया जाएगा। जिसमें प्रथम तो प्राचीन भारतीय वैदिक ज्ञान विज्ञान संस्कृति पर शोध किये जायेंगे। छोटे छोटे कोर्स प्रारम्भ किये जायेंगे। जो विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए

होंगे। दूसरे अपने अतीत में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए होंगे ताकि वो अपने गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा ले सकें। जहां अंतरराष्ट्रीय स्तर की बड़ी बड़ी कॉन्फ्रेंस वेद विज्ञान आदि विषयों पर आयोजित की जाएंगी वहीं छोटे-छोटे सेमिनार भी निरन्तर चलाये जाएंगे। उन्होंने बताया कि यह चेर यूजीसी द्वारा 7 वर्ष के लिए बनाई गई है। यह आगे बढ़ाई भी जा सकती है। उन्होंने आर्य समाज द्वारा किये गए सम्मान के लिए आभार प्रकट किया। बहन पूनम आर्या ने कहा कि वेदों को महर्षि दयानंद ने सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताया है। उस पर कार्य होगा तो पूरे विश्व में वेदों के प्रति लोगों का रुझान व सम्मान बढ़ेगा। स्वामी आदित्यवेश ने कहा कि रविप्रकाश आर्य समाज के गौरव हैं, उनके इस पद पर न्युक्त होने के बाद निश्चित रूप से वेदों पर महर्षि दयानंद के दृष्टिकोण से शोध करने की एक ऐतिहासिक शुरुआत होगी। जिसका लाभ सम्पूर्ण विश्व को मिलेगा।

इस अवसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक रामनिवास आर्य पानीपत, बलराज आर्य पूर्व एसडीओ, जागे राम आर्य, राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह, राजेश आर्य, सत्यवान आर्य, राजेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र कुंडू, कृष्ण प्रजापत आदि भी उपस्थित रहे।

प्रसिद्ध दानवीर स्व. राव रघुनाथ सिंह आर्य की स्मृति में दिनांक 15 मार्च, 2021 को यादव धर्मशाला नजफगढ़ में कार्यक्रम का हुआ आयोजन सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी रहे मुख्य अतिथि



आर्य समाज नजफगढ़ एवं स्व. राव रघुनाथ सिंह आर्य स्मृति समिति के संयुक्त तत्वावधान में गत 15 मार्च, 2021 को महादानी श्री रघुनाथ सिंह आर्य की स्मृति में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में पधारे तथा उनके अतिरिक्त सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, विशिष्ट अतिथि रहे, उनके अतिरिक्त नव दीक्षित युवा संन्यासी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, डॉ. राजन जी, स्वामी कृष्णानन्द जी, स्वामी शिवानन्द जी, साध्वी पुष्पा यति शास्त्री, कन्या गुरुकुल लोआ कला की आचार्या, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य एवं श्री नारायण सिंह आर्य आदि विद्वान एवं विदुषियों ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर श्रोताओं को सम्बोधित किया।

स्मृति सभा के अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा योगाचार्य योगेन्द्र जी ने कुशलता के साथ अपने दायित्व का निर्वहन किया। कार्यक्रम प्रारम्भ होने से पूर्व श्री रघुनाथ सिंह आर्य जी की प्रतिमा का यादव भवन के मुख्य द्वार पर अनावरण किया गया। यादव सभा के प्रधान श्री प्रीतिपाल सिंह खेहरा, श्री बिल्लू पहलवान, श्री लिच्छीराम प्रधान, श्री जिले सिंह आर्य, श्री तेजराम आदि उपस्थित रहे। स्व. श्री रघुनाथ सिंह आर्य जी की धर्मपत्नी सुखमा देवी तथा उनकी सभी पुत्रियों, उनके दामाद तथा परिवार के सभी गणमान्य सदस्य

स्व. प्रधान श्री रघुनाथ आर्य का संक्षिप्त जीवन परिचय

महान दानवीर व डावर के भामाशाह स्व. श्री रघुनाथ सिंह आर्य का जन्म 15 मार्च, 1929 को नजफगढ़ के खैरा गांव में पिता श्री तेजराम आर्य व माता श्रीमती मूर्ति देवी के घर हुआ था। श्री रघुनाथ जी बचपन से ही मेधावी थे उन्होंने अपनी 10वीं तक की शिक्षा सी.आर.जैड. हाईस्कूल सोनीपत से 1949 में पूरी की। मार्च, 1949 में श्री रघुनाथ आर्य की शादी मोलाहेड़ा, गुरुग्राम की श्रीमती सुखमा देवी से हुई। रघुनाथ आर्य जी के 6 लड़कियाँ हैं। आपने सन् 1954 से टी.सी.एम. में ऑपरेटर के पद पर 10 वर्ष नौकरी की। 1961 से 1970 तक आप खैरा गांव के सरपंच रहे तथा इस दौरान आपने गांव व समाज हित में अनेक सराहनीय कार्य किये। सन् 1974 से 1995 तक आप आर्य समाज नजफगढ़ के प्रधान रहे। आपकी अध्यक्षता में कई बार 100-100 किलो घृत से यज्ञ भी किये गये। आर्य समाज के प्रधान पद से त्याग पत्र देकर आपने आर्य समाज शिवाजी मार्ग की स्थापना की। सन् 1992 में नन्दा एन्क्लेव गोपालनगर में 200 वर्ग गज जमीन दान देकर आर्य समाज मंदिर का निर्माण करवाया। सन् 1996 में आपने खैरा गांव में आर्य समाज भवन बनवाया। 1997 में आपने यादव समाज के लिए 750 वर्ग गज का प्लॉट दान में दिया और जिस पर आज भव्य यादव भवन बना हुआ है। 2007 में आपने गांव खेड़ी खुमार व खातीवास में आर्य समाज की स्थापना की। सन् 1975 में गांव खेड़ा में शहीद राव लक्ष्मीचन्द ट्रस्ट का निर्माण किया। आपके माध्यम से अनेकों संस्थाओं को गुरुकुल व गोशालाओं को विपुल धनराशि दान दी गई। आप लोगों के सुख-दुःख में सदैव सहयोगी रहते थे। आपका व्यक्तित्व एक प्रतिष्ठित समाजसेवी, कर्मठ आर्यनेता एवं उदार दानवीर के रूप में विख्यात है। 20 जनवरी, 2020 को 93 वर्ष की आयु में प्रातः 3 बजे आपने अपना नश्वर देह छोड़कर महाप्रयाण किया।

आर्य समाज खैरा के अधिकारी, माता मूर्तिदेवी आर्य समाज, नजफगढ़ के अधिकारी तथा समाज के अन्य गणमान्य लोग समारोह में सम्मिलित हुए। नजफगढ़ नगर एवं क्षेत्र के सैकड़ों प्रमुख लोगों ने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी और सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव जी का माल्यार्पण व शॉल भेंट कर सम्मान किया। अपने उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने राव रघुनाथ सिंह जी को आर्य समाज के महादानी भामाशाह की उपाधि से सम्बोधित करते हुए कहा कि रघुनाथ सिंह

जी एक परोपकारी, धर्मात्मा एवं समाजसेवी व्यक्ति थे। वे लोगों के सुख-दुःख में सदैव आगे बढ़कर शामिल रहते थे। प्रतिदिन व्यायाम व दैनिक यज्ञ उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। अनेक संस्थाओं एवं गुरुकुलों में उन्होंने दिल खोलकर दान दिया और सहयोग करते रहते थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के निधन से निःसंदेह आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। हम सभी को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी ने बताया कि रघुनाथ सिंह जी स्वामी इन्द्रवेश जी एवं स्वामी अग्निवेश जी के अनन्य सहयोगी थे। वे स्वामी द्वय के सभी कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे और सहयोग करते थे।

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने प्रसिद्ध समाजसेवी, दानवीर श्री रघुनाथ सिंह जी के जीवन को वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए विशेष प्रेरणा देने वाला बताया। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री जिले सिंह आर्य जी ने किया। श्री जिले सिंह आर्य जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा स्व. रघुनाथ सिंह जी के विशेष सहयोगियों में प्रमुख हैं। वे अत्यन्त उत्साही एवं निष्ठावान तथा समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं। श्री रघुनाथ सिंह जी की प्रतिमा के अनावरण के इस कार्यक्रम को एक सफल आयोजन के रूप में सम्पन्न करके श्री जिले सिंह आर्य ने अपनी कर्मठता का परिचय दिया है। कार्यक्रम के अन्त में सभी संन्यासियों, विद्वानों एवं उपदेशकों का परिवार की ओर से विशेष सम्मान किया गया।



अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के बहुआयामी व्यक्तित्व तथा कृतित्व को संजोने के उद्देश्य से प्रकाशित किये जाने वाले 'स्मृति ग्रन्थ' हेतु अपने संस्मरण तथा पूज्य स्वामी अग्निवेश जी से सम्बन्धित सामग्री अतिशीघ्र भेजें

विलक्षण प्रतिभा के धनी, जुझारू व्यक्तित्व, सिद्धहस्त लेखक महर्षि दयानन्द जी की वैचारिक विरासत को आत्मसात करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृतियों को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक 'स्मृति-ग्रन्थ' का प्रकाशन करने की योजना बनाई गई है। पूज्य स्वामी अग्निवेश जी सप्तक्रान्ति के मुद्दों (जातिवाद मुक्त समाज, नशामुक्त

समाज, नारी उत्पीड़न मुक्त समाज, पाखण्ड मुक्त समाज, भ्रष्टाचार मुक्त समाज, अन्याय व शोषण मुक्त समाज तथा साम्प्रदायिकता मुक्त समाज) जैसे विषयों के अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक मुद्दों दबे-कुचले लोगों के उत्थान हेतु निरन्तर संघर्षरत रहे। इसके अतिरिक्त बाल मजदूरी एवं बंधुआ मजदूरी, जैसे विषयों के साथ-साथ उन्होंने विश्व की अनेकों समस्याओं को सुलझाने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

उनके सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षिक क्रिया कलापों से सम्बन्धित अथवा उनके प्रति आपके व्यक्तिगत विचार तथा उनके संस्मरण, उनके साथ फोटो, वीडियो आदि जो कुछ भी सामग्री आपके पास उपलब्ध हो उसे शीघ्रातिशीघ्र 7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। जिससे आप द्वारा भेजी गई सामग्री को 'स्मृति ग्रन्थ' में उचित स्थान प्राप्त हो सके।

सृष्टि सम्वत्सर और आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

महर्षि वेदार्थ महाविद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में 13 अप्रैल, 2021 तदनुसार विक्रम सम्वत् 2078, चैत्र शुदी प्रतिपदा को सृष्टि नव संवत्सर और आर्य समाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस शुभ अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, आचार्यों और गणमान्य व्यक्तियों ने सामूहिक बृहत यज्ञ का आयोजन किया जिसमें सम्वत्सर की विशेष आहुतियाँ दी गई।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी रहे और उन्होंने अपने प्रवचन में सम्वत्सर के महत्त्व और मानव जीवन में प्रकृति की उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी ने सृष्टि सम्वत्सर की वास्तविक गणना के विषय में बताया कि ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में महर्षि जी ने भूमिका के लिखने के समय की काल गणना नुसार विक्रम सम्वत् 1933 और सृष्टि सम्वत् 1,96,08,5276 लिखा है इनमें अन्तर 1043 वर्ष आता है इस आधार पर 2078 में 1043 जोड़ने पर वर्तमान सृष्टि सम्वत् 1,96,08,53121 ही आता है। महर्षि जी असत्य कथन नहीं करते। अन्य आचार्यों ने भी अपने विचारों से अवगत कराया। उत्सव समाप्ति पर प्रसाद वितरण किया गया। शांति पाठ के उपरान्त उत्सव समाप्त हुआ।

— स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

सर्वदानन्द महाराज का निर्माण दिवस मनाया

श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम (अलीगढ़) पर वीतराग श्री सर्वदानन्द जी का निर्माण दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी रहे। वेद पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने किया। यज्ञ के उपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता स्वामी जी ने की।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह जी ने वीतराग संन्यासी श्री सर्वदानन्द जी के जीवन और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

स्वामी सोम्यानन्द जी ने अपने सम्बोधन में

कहा कि वर्तमान में कोरोना की महामारी से डरने की आवश्यकता नहीं है, प्रकृति और वर्तमान पर्यावरण के अनुसार खान-पान, आहार-विहार में सन्तुलन तथा सरकार के निर्देशों का पालन करके रोगों पर विजय पाई जा सकती है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा है कि हमें किसी भी परिस्थिति, प्राणी व कष्ट आदि से घबड़ाना नहीं चाहिए। पुरुषार्थ से समस्याओं पर सफलता अवश्य मिलती है। अगर कोरोना हो गया है तो नीम गिलोय का काढ़ा पियें और एक चम्मच काली मिर्च का चूर्ण, 2 चम्मच शहद और एक चम्मच अदरक का रस घोल दिन में तीन बार लें।

— प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

— लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या-256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/- रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/- रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष :-011-23274771, 23260985

वैदिक धर्म की सदैव जय-जयकार हो

— दीपक कुमार छिल्लर

मन-मंदिर में सोचता हूँ,

क्या है आर्य समाज?

जहाँ ईश्वर है एक।

पालन करते सभी वैदिक नियमों का,

रास्ता है यह बिल्कुल नेक।

अच्छे संस्कारों का गुच्छा है यहाँ,

प्राप्त करता इसे प्रत्येक।

अंधकार को दूर कर रहे,

ऋषिवर देव दयानन्द जी के अनुगामी।

हम सभी वैदिक नियमों की डोरी पकड़कर,

नेक कर्म कर सीखते संस्कार अनेक।

जहाँ हर नर-नारी की पुकार हो।

वैदिक धर्म की सदैव जय-जयकार हो।।1।।

ऋषिवर के गीतों में जहाँ पाखण्डों का खण्डन होता,
ढोंगी बाबाओं के चक्कर में क्यों अपना तन, मन, धन खोता।

ऋषिवर की शिक्षाओं का पालन करके देखो,

मन से अपने गलत विचारों को दूर फेंको।

भव-सागर को पार करायेगा इस जग में,

महर्षि दयानन्द जी का सन्मार्ग अपनायेगा जो जीवन में।

वैदिक शिक्षाओं को जीवन भर अपनायेंगे,

सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान से हम संवर जायेंगे।

बुरी आदतों, व्यसनों से लड़ने की हुंकार भरो,

जीवन भर आर्य समाज का प्रचार करो।

एक अटूट विश्वास की ललकार हो।

वैदिक धर्म की सदैव जय-जयकार हो।।2।।

सात्विक आहार, अच्छा व्यवहार जीवन भर अपनाएं,
सादगी और ईमानदारी की रीति से तर जायें।

नेकी के पथ पर चलना हमें सिखाया,

हमेशा आदर्श के रूप में महर्षि दयानन्द जी को पाया।

जहाँ बड़ों का सम्मान, गुरुजनों के प्रति सेवा भाव,

जैसे कड़ी धूप में मिलती हमें पेड़ों की छांव।

जन-जन की यही पुकार हो,

आर्य समाज को अपनाने का प्रचार हो।

हम सभी में अच्छे संस्कारों का संचार हो।

वैदिक धर्म की सदैव जय-जयकार हो।।3।।

म. नं.-1022, ग्राम सभा कालोनी, सरदार पटेल झील के पास, पूठकलां, दिल्ली-110086

मो.-9990422051

सोशल मीडिया के
माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी
से जुड़ें



आर्य युवा संन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व
फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटारें -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में दिनांक 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2021 को महात्मा फगूराम (सोनी महात्मा) की स्मृति में किये गये अनुकरणीय कार्यक्रम का हुआ भव्य समापन संन्यासियों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों को किया गया सम्मानित



दिनांक 31 मार्च व 1 अप्रैल, 2021 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक, हरियाणा में स्व. महात्मा फगूराम (सोनी महात्मा) की पुण्य तिथि के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज (वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य तथा दर्शनाचार्य), सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री राम निवास आर्य आदि ने दो दिन तक अपने विचारों से श्रोताओं को वेदज्ञान के द्वारा अनुप्राणित किया। कार्यक्रम प्रातः एवं दोपहर विद्यापीठ आश्रम में तथा रात्रि को टिटौली ग्राम में आयोजित किया गया। प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ, 10 से 1 बजे तक भजनों एवं व्याख्यान का कार्यक्रम तथा रात्रि 8 से 11 बजे तक भजनों तथा व्याख्यान का कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में दोनों दिन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के लगभग 200 छात्र एवं छात्राएँ सम्मिलित रहे और उन्होंने आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को जानने व समझने का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रातःकाल 8 से 10 बजे तथा सायंकाल 4 से 6 बजे तक यज्ञ का विशेष कार्यक्रम स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के ब्रह्मत्व में चला और कार्यक्रम का पूरा संयोजन स्वामी आदित्यवेश जी ने किया।

विदित हो कि स्व. महात्मा फगूराम के योग्य सुपुत्र श्री बलराज वर्मा, सेवानिवृत्त एस.डी.ओ. प्रतिवर्ष अपने पूज्य पिता जी की स्मृति में यह कार्यक्रम विभिन्न संस्थाओं या स्थानों पर आयोजित करते हैं। वे उच्च कोटि के संन्यासियों, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों को आमंत्रित करके वेद प्रचार की धूम मचाते हैं और उन्हें श्रीफल, शॉल तथा दक्षिणा आदि से सम्मानित करते हैं। इसी प्रकार सैकड़ों छात्र-छात्राओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी श्री बलराज वर्मा शॉल आदि भेंट कर सम्मानित करते हैं। इस वर्ष यह कार्यक्रम उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में आयोजित करने का निश्चय किया और अपनी ओर से लगभग एक हजार पुस्तकों एवं सैकड़ों शॉल व स्मृति चिन्हों का वितरण करके कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले न केवल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को बल्कि गांव की महिलाओं एवं

पुरुषों को भी पुस्तक एवं प्रसाद वितरण करके उत्साहित किया। इस कार्यक्रम में दयानन्द शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के नवनियुक्त अध्यक्ष प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. रवि प्रकाश आर्य, संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. बलवीर आचार्य को भी आमंत्रित कर सम्मानित किया गया। इनके अतिरिक्त आर्य समाज टिटौली, आर्य समाज खिडवाली, आर्य समाज सांघी के प्रमुख कार्यकर्ताओं एवं बेटे बचाओ अभियान की सभी कार्यकर्ता बहनों को भी सम्मानित किया गया। इसी प्रकार आर्य साधिका मण्डल की कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। दोनों दिन ऋषिलंगर की समुचित व्यवस्था श्री बलराज वर्मा की ओर से की गई थी। गांव

न ही उनके अनुभवों का लाभ युवाओं को मिल पाता है। भौतिकवाद की आंधी में नैतिक मूल्य समाप्त हो रहे हैं, परिवारों में परस्पर सहयोग एवं स्नेह का वातावरण खत्म हो रहा है और बुजुर्ग लोग अत्यन्त उपेक्षित हो रहे हैं। ऐसे में श्री बलराज वर्मा द्वारा चलाये जा रहे इस कार्यक्रम से युवकों को प्रेरणा लेनी चाहिए और प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनुरूप अपने माता-पिता, बड़े-बुजुर्गों के ऋण एवं उपकारों को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने श्री बलराज वर्मा का हृदय से कोटिशः धन्यवाद करते हुए उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि वे वेद के उस मन्त्र को चरित्रार्थ कर रहे हैं जिसमें कहा गया है -

**अनुव्रतः पितुः पुत्रो, माता भवतु सम्मनाः।
जाया पत्ये मधुमतीम्, वाचं वदतु शन्तिवाम्।।**

अर्थात् अपने माता-पिता के व्रतों को पूरा करने वाले उनके संकल्पों को आगे बढ़ाने वाले जो पुत्र-पुत्रियाँ होते हैं वे सही अर्थों में अपने माता-पिता के अनुयायी होते हैं। इस कार्यक्रम में स्वामी आदित्यवेश जी का युवाओं के लिए ओजस्वी उद्बोधन एवं बहन पूनम आर्या जी का योग विषय पर प्रेरणादाई प्रवचन सभी युवाओं को विशेष रूप से प्रभावित करने वाला था। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य ने देशभक्तों एवं क्रांतिकारियों से सम्बन्धित जोशीले भजन सुनाकर युवाओं को प्रेरित किया और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझने की प्रेरणा दी।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में व्यवस्था का पूरा दायित्व बहन प्रवेश आर्या एवं श्री ऋषिराज शास्त्री ने संभाला और श्री वीरेन्द्र कुण्डू ने गांव के प्रचार कार्य को अपने पुरुषार्थ से अत्यन्त सफल बनाया। श्री वीरेन्द्र कुण्डू के अतिरिक्त आर्य समाज टिटौली के अन्य कार्यकर्ताओं ने भी इसमें अपना पूरा योगदान दिया। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की छात्र-छात्राओं को कार्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए प्रो. कर्मवीर श्योकन्द, डॉ. श्री भगवान, श्री सविता राठी, डॉ. मीनाक्षी हुड्डा, डॉ. सोनू आदि का विशेष सहयोग रहा। इन सभी प्रोफसरों को भी श्री बलराज वर्मा जी ने विशेष रूप से सम्मानित किया और श्री वीरेन्द्र कुण्डू के भी कार्यक्रम में योगदान की विशेष प्रशंसा की। कार्यक्रम अत्यन्त रोचक, प्रभावशाली एवं सफल रहा।

के कार्यक्रम में प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशिका विदुषी बहन कल्याणी आर्या एवं कु. तनू आर्या का भी प्रभावशाली कार्यक्रम लोगों को सुनने को मिला। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि श्रोताओं को विशेष रूप से प्रेरणा दी गई कि अपने माता-पिता व बुजुर्गों का सम्मान करना सीखें और सम्मान करने के लिए उनके बताये हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लें। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया कि वर्तमान समय में संस्कारों एवं शिक्षा की कमी के कारण युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों से विमुख होती जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप न उनकी सेवा हो पाती है और



प्रो० विडलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विडलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.-0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।